धर्मायण

Title Code- BIHHIN00719

आलेखानुक्रम

1. **खरमास- एक ऐतिहासिक और वैज्ञानिक विवेचन**
   - डॉ. परेश सक्सेना 5
2. **पौष : फसल के लिए पुष्ययात्रा का अवसर और वर्षफल का दर्शक**
   - डॉ. श्रीकृष्ण "जुगनू" 13
3. **पौष मास की पुष्यता**
   - डॉ. सुदर्शन श्रीनिवास शाण्डिल्य 18
4. **'कृत्यरत्नाकर' के आलोक में पौषमास**
   - डॉ. लक्ष्मीकान्त विमल 22
5. **खरमास : एक सिंहावलोकन**
   - डॉ. रामाधार शर्मा 29
6. **पौष में सौभाग्य के लिए 'तिलदाही' व्रत का विधान**- संकलित 33
7. **पौष मास की विशेष पूजा- कूर्मद्वादशी** -संकलित 37
8. **पौष मास का एक लोक-विधान 'पुसैठ '**
   -कुमुद सिंह 40
9. **पौष मास की एकादशी का माहात्म्य-** संकलित 42
10. **विष्णु : व्यापक वैश्विक स्वरूप**
    - श्री अम्बिकेश कुमार मिश्र 51
11. **सनातन धर्म में गृहस्थ आश्रम एवं पति-पत्नी के आदर्श -**
    -श्री राधा किशोर झा 55
12. **अध्यात्म-रामायण से रामकथा**
    -आचार्य सीताराम चतुर्वेदी 65
13. **विद्या और विवेक में अन्तर**
    -डॉ. राजनीति झा 69

पुस्तक समीक्षा- डा. रामविलास चौधरी कृत जलन्धरवधमहाकाव्यम् 74

महावीर मन्दिर समाचार, मातृभूमि-वन्दना, व्रत-पर्व, रामावत संगत से जुड़ें 76

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखक के हैं। इनसे सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हम प्रबुद्ध रचनाकारों की अप्रकाशित, मौलिक एवं शोधपरक रचनाओं का स्वागत करते हैं। रचनाकारों से निवेदन है कि सन्दर्भ-संकेत अवश्य दें।

धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना की पत्रिका

अंक 102

पौष, 2077 वि. सं.

31 दिसम्बर, 2020ई.– 28 जनवरी, 2021ई.

प्रधान सम्पादक

आचार्य किशोर कुणाल

सम्पादक

भवनाथ झा

पत्राचार:

महावीर मन्दिर,

पटना रेलवे जंक्शन के सामने

पटना- 800001, बिहार

फोन: 0612-2223798

मोबाइल: 9334468400

E-mail:

dharmayanhindi@gmail.com

Website:

www.mahavirmandirpatna.org/dharmayan/

Whatsapp: 9334468400

मूल्य : 20 रुपये

पाठकीय प्रतिक्रिया

(अंक संख्या 101, अग्रहायण, 2077 वि.सं.)

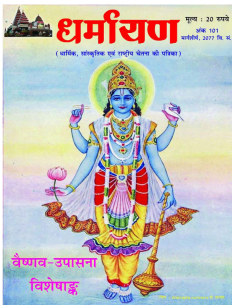

वैष्णव उपासना अंक के प्रकाशन की आत्मिक बधाई। इस दौर में यह बहुत श्रमसाध्य कार्य का सफल सोपान है। नारायण का विष्णु से समन्वय और शालग्राम शिला रूप से सकल (चित्र, अर्चा, प्रतिमा रूप) रूप प्रतिष्ठा... अनेक पक्ष रोचक हैं। विद्वज्जनों ने बहुत सुंदर विचार दिए हैं। जब स्थितियाँ सामान्य हों, ये अंक छपना चाहिए। पुन: बधाई पूरी टीम को।

डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, उदयपुर (राजस्थान)

'धर्मायण' की संग्रहणीयता

'महावीर मन्दिर प्रकाशन' से प्रकाशित होनेवाला हिन्दी का सम्मान्य एवं शोधपत्र 'धर्मायण' अब 102वें अंक तक पहुँच गया है। यह शुरू से ही ज्ञान-पिपासुओं के लिए आस्वाद्य एवं मोदप्रद रहा है। लेकिन इधर इसकी संग्रहणीयता बढ़ी है। यद्यपि कोरोना-काल के कारण इसकी साफ्ट कापी ही दिख पा रही है, तथापि अब विषय-विशेष पर केन्द्रित शोधालेखों के संचयन के कारण इसका प्रत्येक अंक अपने कलेवर में ही पुस्तकवत् होता जा रहा है। यह पहले से ही बिहार का गौरव बढ़ानेवाला रहा है, अब तो अपने वैशिष्ट्य से शोधार्थियों का अतिशय मार्ग प्रशस्त करनेवाला है। दूर-दूर के बड़े-बड़े विद्वान् लेखकों को स्थान देकर स्वयं तो पुष्ट हो ही रहा है, भारतीय संस्कृति को भी पुष्टि दे रहा है। एतदर्थ व्यवस्थापक एवं सम्पादक स्तवनीय हैं। 'धर्मायण' सदा प्रगतिमान रहे, यही कामना है।

मार्कण्डेय शारदेय
सनातन ज्योतिष,
पाटलिग्राम एपार्टमेंट, शहीद भगत सिंह पथ,
बजरंगपुरी, गुलजारबाग, पटना-800007

आपको यह अंक कैसा लगा? इसकी सूचना हमें दें। पाठकीय प्रतिक्रियाएँ आमन्त्रित हैं। इसे हमारे ईमेल dharmayanhindi@gmail.com पर अथवा ह्वाट्सएप सं- +91 9334468400 पर भेज सकते हैं।

'धर्मायण' का अगला अंक **रामानन्दाचार्य विशेषांक** के रूप में प्रस्तावित है। उन्होंने सामाजिक समरसता के लिए **जात-पाँत पूछै नहि कोय हरि को भजै सो हरि को होय** का नारा देकर मध्यकाल में एक सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात किया था। इस उदात्त परम्परा को आज के परिप्रेक्ष्य में विवेचन करने के लिए यह अंक प्रस्तावित है।

'धर्मायण' के अगले वर्ष की रूपरेखा

अत्यन्त हर्ष के साथ सूचित करना है कि वि.सं. 2077 में अभी तक 10 अंक विशेषांक के रूप में निकल चुके हैं। पूर्वनियोजित दो अंक शेष हैं, जिनमें से माघ का अंक जगद्गुरु रामानन्दाचार्य पर केन्द्रित है तथा उसका अगला अंक सन्त रविदास पर। हमें विश्वास है कि इन दोनों अंकों के सम्पादन में भी हमारे वरिष्ठ एवं विद्वान् लेखकों का पूरा सहयोग रहेगा और पूर्ववत् ये दोनों अंक गरिमामय रूप में निकल जायेंगे।

अगले वर्ष विक्रम संवत् 2078 के लिए भी हम प्रत्येक अंक के केन्द्रीय विषय पूर्व-निर्धारित कर लेना चाहते हैं। लेखकों के समूह के द्वारा कुछ सुझाव हमारे पास आये हैं, जो इस प्रकार हैं- संस्कार, चरित्र-निर्माण, शिक्षा, लोक-वाङ्मय, ज्ञान -विज्ञान, वर्णाश्रम-व्यवस्था, हनुमान्, वर्णाश्रम, महामना मालवीय, गृहस्थधर्म, छात्रधर्म, संन्यासधर्म, नवधा-भक्ति, एवं दशावतार। इन विषयों पर केन्द्रित अंक के लिए बहुमूल्य सुझाव आये हैं।

आप भी इनमें कुछ विषय जोड़ना चाहतें हैं तो सुझाव हमारे ईमेल dharmayanhindi@gmail.com पर अथवा ह्वाट्सएप सं- +91 9334468400 पर भेज सकते हैं।

-सम्पादक